राजा बलवन्त सिंह जी का जीवन परिचय

अवागढ़ राजपरिवार रॉयल जादौन राजपूत करौली राजवंश से संबन्धित है जो उत्तरप्रदेश के सम्पूर्ण जादौन राजपूतों का प्रतिनिधुत्व करता है। इस राज्य की उत्पति से पहले करौली के राजा कुंवरपाल जी के पुत्र राजा आनंदपाल जी करौली से विस्थापित हो कर मथुरा जिले के छाता परगना के नरी गांव में जाकर बसे। इस परिवार का इतिहास मुहम्मद शाह के समय से (सन् 1720 से 1747) प्रारम्भ होता है। राजा बलवन्त सिंह जी के पूर्वज ठाकुर चतुर्भुज सिंह जी जो मथुरा जिले के नरी गांव के जमींदार थे वहां से विस्थापित होकर जलेसर में जाकर बस गये तथा वैद्य या फिजिशियन का कार्य करने लगे। उस समय जलेसर मथुरा जिले का परगना था, वहां के स्थानीय गवर्नर ने उनको मीसा नामक एक गांव उनकी सेवा से खुश होकर दे दिया जो अवा गांव से 2 मील दूर था। आगे चल कर दोनों गांवों के नाम से अवा–मीसा ताल्लुका कहलाया। अवा गांव में गढ़ बन जाने के कारण अवा–मीसा ताल्लुक को एस्टेट का दर्जा प्राप्त हो गया तथा बाद में अवागढ़ नाम प्रचलित हो गया। राजा बलवन्त सिंह जी के पूर्वज ठाकुर पीताम्बर सिंह को 1838 ई. में गवर्नर जनरल लार्ड ऑकलैंड द्वारा राजा की उपाधि से नवाजा गया जिसका समर्थन उदयपुर के महाराणा फतेह सिंह जी ने भी किया। इन्ही के वंश में 21 सितम्बर सन् 1853 को राजा बलवंत सिंह जी का जन्म हुआ था। राजा बलवन्त सिंह जी का बाल्य जीवन गाँव में ही सम्पन्न हुआ। उस जमाने में गांवों में पठन–पाठन की अधिक सुविधाएं नहीं थीं जिससे उनका अक्षर ज्ञान शून्य ही रहा। उन्होंने हिन्दी में अपना हस्ताक्षर करना भी नहीं सीखा था। वे सामयिक घटनाओं की जानकारी रखने के लिए अशिक्षित होते हुए भी नित्य समाचार सुना करते थे।

सन् 1880 ई. में अवागढ़ परिवार सम्पूर्ण अपर इंडिया में सबसे धनी जमींदार थे। अवागढ़ रियासत यूनाइटेड प्रोविंस क्षेत्रफल में सबसे बड़ी रियासत थी जिसका क्षेत्रफल 350 वर्ग मील था जो एटा, अलीगढ, मैनपुरी, मथुरा, फरुखाबाद और आगरा जिलों में फैला हुआ था। इस एस्टेट के अंतर्गत 230 गांव तथा 292 हैमलेट्स आते थे। उस जमाने में अवागढ़ एस्टेट अपनी सालाना आय (लगभग 8 लाख) से 3.5 लाख रुपये अंग्रेज सरकार को प्रदान करती थी। राजा बलवन्त सिंह जी सन् 1890 में अवागढ़ रियासत के राजा के पद पर बिराजमान हुऐ। उस समय उनकी उम्र 36 वर्ष की थी। वे शारीरिक रूप से बहुत ही बलवान और तेज बुद्धि वाले थे। उनके बारे में कहा जाता है कि उनका ध्यान व्यायाम तथा शारीरिक परिश्रम की ओर ज्यादा रहता था। वे पुरुषार्थी अधिक थे। जब वे अवागढ़ की गद्दी पर विराजमान हुए थे तब अवागढ़ रियासत की आय 7–8 लाख रुपये वार्षिक थी किन्तु उनके सुप्रबन्ध के फलस्वरूप प्रतिवर्ष आय में वृद्धि होती गई। यहां तक कि 19 वर्ष में आय लगभग 13 लाख हो गई। उनकी प्रबन्ध व्यवस्था इतनी सुगम तथा सरल थी कि उनके कभी बाहर चले जाने पर भी कार्य में किसी प्रकार की असुविधा उत्तपन्न नहीं होती थी। प्रबन्ध की प्रणाली इतनी सुव्यवस्थित थी कि जो देखता वही प्रशंसा करने लगता था। अधिकांशतः राजा साहब स्वयं ही राज्य सम्बन्धी समस्त कार्यों को देखते थे। राजा बलवंत सिंह जी को लॉर्ड कर्जन के समय सन् 1902 में दिल्ली दरवार में बुलाया गया। उनको मार्ले मिंटो रिफार्म के अंतर्गत प्रान्तीय कौंसिल का सदस्य नियुक्त किया गया जिसमें लगभग 2 वर्ष कार्य करने के उपरान्त उनको कॉम्पैनियन ऑफ द इंडियन एम्पायर (सी.आई.इ) की उपाधि प्रदान की गई।

उन्नीसवीं शताब्दी में बाद के 50 वर्षों में भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में सामान्य और पुनर्जागरण की लहर दिखाई दी। जागृति के दौर में सुधारकों द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन किया जा रहा था और विकास शील शक्तियां देश को प्रगति की राह पर ले जाने के लिए एक जुट होती दिखाई दे रही थी। देश में नये जीवन का स्पंदन दिखाई दे रहा था और जागृति की लहर से कोई भी सम्प्रदाय अछूता नजर नहीं आ रहा था। उस समय राजपूत समुदाय अपने गौरवशाली अतीत को भूल चुका था और सामान्य पतन का दंश झेल रहा था। शैक्षिक दृष्टिकोण से वह काफी पिछड़ा हुआ नजर आ रहा था। कुछ समाज के कुलीन वर्ग (नोबल मेन) के व्यक्ति जैसे राजा बलवन्त सिंह जी अवागढ़, राजर्षि राजा उदयप्रताप सिंह बिसेन जी भिनगा, ठाकुर उमराव सिंह जी कोटला एवं उनके छोटे भाई नौ निहाल सिंह जी, राजा लक्ष्मण सिंह जी बजीरपुरा विख्यात हिंन्दी गद्य के शलाका पुरुष, कुंवर लेखराज सिंह जी गभाना, ठाकुर कल्याण सिंह जी जलालपुर (अलीगढ़), बाबू प्रसिद्धि नारायण सिंह जी बनारस, बाबू सांवल सिंह जी बनारस, राजा रामपाल सिंह जी बहादुर कालाकांकर, मेजर जनरल प्रताप सिंह जी, महाराजा साहिब जम्मू–काश्मीर आदि अपने क्षत्रिय समुदाय की पिछड़ी हुई स्थिति को देख कर व्यवथित थे और साथ ही उन्होंने यह अनुभव किया कि राजपूत समाज को यदि देश की राजनीति में एक उपयोगी सदस्य के रूप में पुनर्जीवित करना है तो अपने गौरवशाली अतीत को पुनः प्राप्त करना होगा जिससे देश के विकास में अच्छी तरह से कोई योगदान दिया जा सके और अपनी भागीदारी सुनिश्चित की जा

सके। उसके लिए अपने राजपूत बच्चों को शिक्षित करना होगा जिसके बिना कुछ भी सम्भव नहीं होगा। उस काल के अधिकांश राजा–रईस प्रायः लोकहितकारी कार्यों से विमुख होकर अपने वैभवजन्य विलासिता पूर्ण जीवन यापन के अभ्यस्त थे। ऐसे लोगों के पास लोकहितकारी सामाजिक उत्थान एवं विकास के कार्यों के लिए न ही समय, न ही पैसा था और न ही थी उनकी इच्छाशक्ति, परन्तु राजा बलवन्त सिंह, अवागढ़ इसके अपवाद थे। आपने लोकहितकारी कार्यों में समय और पैसा दिया जिसको उनके बाद भी अवागढ़ राजपरिवार ने पूर्ण निष्ठा के साथ निभाया।

राजा बलवन्त सिंह का जीवन ऐसे काल में व्यतीत हुआ जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और अंग्रेजी साम्राज्य की नींव मजबूत हो चुकी थी। मनुष्य अंग्रेजों को देवतुल्य स्वीकार करने पर उतारू हो चुके थे। इस स्थिति में राजा बलवन्त सिंह जी ने अपने सम्मान तथा प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखा। अशिक्षित होने के कारण वे समाचार पत्र भी स्वयं नहीं पढ़ सकते थे। किंतु सामायिक घटनाओं से अपने को अनभिज्ञ न रखना चाहते थे। अतः नित्य समाचार सुना करते थे। अवागढ़ नरेश खुद अशिक्षित थे। इस पीड़ा से उनके मन में राजपूतों के शैक्षणिक विकास की भावना का दर्द जाग्रत हुआ और इसके लिए उन्होंने साक्षरता के प्रसार की ओर अपनी दूरगामी दृष्टि फैलाई। उन्होंने सन् 1885 ई. में देश में राजपूतों की शिक्षा और उत्थान के लिए आगरा में राजपूत बोर्डिंग हाउस छात्रावास प्रारम्भ किया। उन्होंने 13 हजार रुपये में हॉस्टल के लिए जमीन खरीदी। इसके बाद यूनाइटेड प्रोविन्स के गवर्नर सर ऑकलैंड कॉल्विन के द्वारा राजपूत हॉस्टल का विधिवत शुभारम्भ किया गया जिसका 1887 में क्वीन विक्टोरिया की रजत जयंती होने की वजह से **जुवली राजपूत बोर्डिंग हाउस** का नाम दिया गया। यही राजपूत बोर्डिंग हाउस सन् 1899 में राजा साहब अवागढ़, श्रध्येय स्वर्गीय पंडित मदन मोहन मालवीय जी, राजा रामपाल सिंह जी कालाकांकर और कोटला के ठाकुर उमराव सिंह के परामर्श से राजपूत हाई स्कूल में अपग्रेड हुआ जिसके प्रथम प्रधानाचार्य कर्नर डोब्सन तथा सर इ एच् फोरसिथ थे। स्कूल में राजपूत समाज के छात्रों को वरीयता दी जाती थी। 1901 में प्रथम मैट्रिक परीक्षा बैच राजपूत छात्रों ने इलाहाबाद विश्व विद्यालय से सम्बंधित इस स्कूल से पास की। राजा साहब इस स्कूल को कॉलेज के रूप में देखना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने 100 एकड़ जमीन और 15 लाख रुपया दान के रूप में दिया था। इसके बाद इस स्कूल का नाम अपने उदार संस्थापक के नाम पर **बलवन्त राजपूत हाई स्कूल** नाम से जाना गया। आज यही स्कूल अवागढ़ राज परिवार के सहयोग एवं अथक प्रयासों की वजह से महान बट बृक्ष का रूप धारण करके अशोक स्तम्भ की तरह गौरवशाली रूप में खड़ा होकर संस्थापक की स्मृति दिलाता रहता है जो दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा महाविद्यालय है जिसके पास आज के समय में भी 1100 एकड़ जमीन है जिसकी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते।

देश के इतिहास में पहली बार अवागढ़ के राजा बलवंत सिंह जी के प्रतिनिधित्व में कोटिला के ठाकुर उमराव सिंह जी और भिंगा, उत्तर प्रेदश के राजा उदय प्रताप सिंह जी के सहयोग से क्षत्रियों के सामाजिक उत्थान के लिए एक संगठन **अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा** को 19 अक्टूबर सन् 1897 में रजिस्टर्ड कराया गया जिसके संथापक राजा बलवंत सिंह जी को बनाया गया। भारतीय क्षत्रिय महासभा की प्रथम सभा आगरा में उनके राजपूत बोर्डिंग हाउस में हुई। राजा बलवंत सिंह जी ने बनारस के बाबू सांवल सिंह जी की अध्यक्षता में प्रस्ताव पारित करके 20 जनवरी सन् 1898 को राजपूत समाज में यूनिटी और जागृती लाने के उदेश्य से एक **न्यूज लेटर** जिसको **राजपूत मंथली** का नाम दिया गया प्रकाशित किया गया। इस पत्रिका के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में फैले हुए क्षत्रिय समाज में जागृति व यूनिटी लाने के लिए जनसम्पर्क व् सभाएं शुरू हुई।

1897 में देश में भीषण अकाल आया था उस समय राजा साहब ने क्षेत्र की जनता की दिल खोल कर आर्थिक तथा खाद्यान्न प्रदान करके खूब मदद की थी। इससे प्रभावित होकर तत्कालीन सरकार ने राजा साहब को **कॉम्पैनियन ऑफ द इंडियन एम्पायर** (सी.आई.इ) की उपाधि से नवाजा। अवागढ़ राजा साहब के दिल में अपनी राजपूत जाति से अगाध प्रेम था। वे बड़े भावुक, उदारवादी होने के साथ–साथ दूरदर्शी सोच के धनी इन्सान थे जो हर समय राजपूतों के उत्थान के विषय में चिंतित रहते थे। आज सम्पूर्ण क्षत्रिय समाज राजा बलवन्त सिंह जी अवागढ़ की दानशीलता की सादर भूरि–भूरि प्रशंसा करता है जिसके कारण उनके द्वारा राजपूतों के लिए स्थापित की गई शैक्षणिक संस्था आधुनिक **राजा बलवन्त सिंह महाविद्यालय आगरा** ऐसी आशातीत प्रगति को प्राप्त हुई। राजा साहब के दान से असंख्य लोग लाभान्वित हुए है। जब तक यह संस्था इस संसार में विद्यमान रहेगी तब तक इसके विद्यादान का क्षेत्र सतत बढ़ता ही रहेगा और विद्यार्थियों की असंख्य भावी पीढ़ियां राजा बलवन्त सिंह जी अवागढ़ का हमेशा यशोगान करती रहेंगी। राजा बलवन्त सिंह ने आगरा में 21 जून 1909 को अपने शरीर का परित्याग किया। उन्होंने अपने जीवन में यह आदर्श रखा कि अशिक्षित व्यक्ति भी संसार में धनोपार्जन द्वारा दूसरों को शिक्षित करके सहायता प्रदान कर सकता है तथा सद्कार्यों के सम्पन्न करने में भी सफलता प्राप्त कर सकता है ।

– धीरेन्द्र सिंह जादौन
राष्ट्रीय मिडिया सलाहकार,नार्थ इंडिया अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा (अध्यक्ष, राजा दिग्विजय सिंह जी, बांकानेर), सवाईमाधोपुर, राजस्थान